विदग्ध वनदेवी: साहित्य भी और विज्ञान भी

प्रो. सुशील कुमार शर्मा

सीनियर प्रोफ़ेसर

हिंदी विभाग

मिज़ोरम केंद्रीय विश्वविद्यालय,

आइज़ोल (मिज़ोरम)

डॉ. अंजना सिंह सेंगर द्वारा सीता पर केंद्रित काव्य कृति - 'विदग्ध वनदेवी' ने माँ भारती के अक्षय साहित्य-कोश में श्रीवृद्धि की है। सीता को केंद्र में रखकर अब तक जो भी काव्य-कृतियाँ सृजित हुई हैं, 'विदग्ध वनदेवी' उनमें अपना विशिष्ट स्थान रखती है। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' ने सीता के पावन चरित्र को लेकर 'वैदैही वनवास' महाकाव्य का सृजन किया। इस महाकाव्य की रचना के समय देश अपने खोये हुए गौरव की स्थापना के लिए सचेष्ट था। यही कारण है कि इस आदर्शवादी कृति पर गांधीवाद का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। तब से लेकर 'विदग्ध वनदेवी' तक पर्याप्त वैचारिक उथल-पुथल हुई और इस नारी पात्र को लेकर पचासों ग्रंथ रचे गये। इस काव्य-ग्रंथ सहित उन तमाम ग्रंथों में रचनाकारों के विभिन्न विचारों की अभिव्यक्ति हुई है।

'विदग्ध वनदेवी' खण्डकाव्य है। कवियित्री डॉ. अंजना सिंह सेंगर ने स्वयं इसे खण्डकाव्य की संज्ञा प्रदान की है: "प्रस्थान से महाप्रस्थान तक पंचदश शीर्षकों में निरूपित इस खण्डकाव्य में आत्मिक, सामाजिक और मानसिक धरातल पर लोक- जीवन से परित्यक्त नारी मन की वेदना का गान है।"[1] अपने उक्त वक्तव्य में डॉ. अंजना सिंह सेंगर ने कृति के भावपक्ष और कलापक्ष की संरचना को स्पष्ट कर दिया है: कृति खंडकाव्य है, खंडकाव्य सर्गबद्ध है, सर्ग शीर्षक युक्त हैं और कृति का वर्ण्य- विषय स्त्री- मन की वेदना का प्रस्तुतिकरण है। सामान्यतः खंडकाव्य सर्गबद्ध नहीं होते। परन्तु कवयित्री ने अपने खण्डकाव्य को पन्द्रह सर्गों में विभक्त कर संभवतः नया प्रयोग किया है। इन सर्गों के शीर्षक हैं: 1. प्रस्थान 2. तमसा तट पर
3. दग्ध पीर के क्षण
4. लखन लाल के भाव 5. प्रकट हुई वनदेवी 6. वाल्मीकी के आश्रम में
7. पर्ण कुटीर बनी 8. वनदेवी का जीवन 9. लव-कुश जन्म का काल
10. रामायण ने जन्म लिया 11. लव कुश का लक्ष्य साधन 12.वैदेही का वैकल्य
13. अश्वमेध का अश्व थमा 14. रामायण का गायन 15. महाप्रस्थान [2]

पन्द्रह लघु सर्गों में आबद्ध होने के पश्चात भी कथा- सूत्र में कहीं बिखराव नहीं है। प्रत्येक सर्ग पढ़ते हुए पाठक स्वयं को कथा- लोक के उसी प्रसंग में पाता है, जो चित्रित हो रहा है। कृति की भाषाई सशक्तता का यह श्रेष्ठ उदाहरण है। सटीक शब्द- चयन और भाषा के सरल-तरल प्रवाह का कवयित्री ने विशेष ध्यान रखा है। कृति का आरंभ ही चित्रात्मक भाषा से होता है:

राजमहल के शयन- कक्ष में
घृत दीपों का जाल,
फैला मद्धिम-सा प्रकाश,
है किरणों का संजाल।

मंद-मंद पग धरें धरा पर
विह्वल राजा राम,
मन प्रश्नों का जाल समेटे,
हृदय करे संग्राम।

अंकपाश में भर लेने को
हिय में उमड़ी चाह,
सीते- सीते के सँग निकली
भरे कंठ से आह। [3]

विवेच्य खण्डकाव्य की एक विशेषता बरबस पाठक का ध्यान आकृष्ट करती है। गीता प्रेस, गोरखपुर से प्रकाशित रामचरितमानस के गुटके में प्रत्येक काण्ड के पूर्व उस काण्ड के किसी महत्वपूर्ण प्रसंग का रेखाचित्र बना है। ठीक उसी प्रकार 'विदग्ध वनदेवी' के प्रत्येक सर्ग में चित्रित रेखाचित्र संदर्भित सर्ग में वर्णित घटना-विशेष को इंगित करता है। इससे कृति में अतिरिक्त रोचकता आयी है।

'विदग्ध वनदेवी' आहों का काव्य है, कराहों का काव्य है, वेदना और संवेदना का काव्य है तथा प्रेम और समर्पण का काव्य है। इसमें केवल रुदन नहीं है। रुदन मानवोचित स्वभाव है तो। पर रुदन के आँसू जब समष्टिगत संकल्प लेकर बहते हैं, तो वे अधिक मूल्यवान होते हैं। मूल्यवान इसीलिए कि इनमें लोक-कल्याण

'विदग्ध वनदेवी' की कवयित्री अंजना सिंह सेंगर ने अपने खंडकाव्य में अपनी कल्पना से पारंपरिक कथा में कतिपय परिवर्तन किये हैं। पारंपरिक कथा में लव-कुश का जुड़वां जन्म विख्यात है। लोक- मान्यता के अनुसार- जन्म लव का हुआ था और वाल्मीकि द्वारा कुशा (एक घास, जो कर्मकांड के काम आती है) से शिशु का निर्माण कर उसमें प्राण डाले गये थे। इसलिए उसका नामकरण कुश किया गया। कवयित्री अंजना सिंह ने लव-कुश के जन्म में दो वर्षों का अंतराल चित्रित किया है:

दूजे सुत का हुआ आगमन
दो वर्षों पश्चात,
आभामय मनहर मुखमंडल,
हर्षित थे माँ-तात।

वाल्मीकी ने नाम रखा कुश,
मुदित हुआ वन धाम,
तमसा विहँसी, उपवन सरसा
हर्षित सीताराम।[5]

परन्तु, अनायास ही सही, कवयित्री ने इस 'अंतराल' के द्वारा एक वैज्ञानिक सत्य को स्थापित करने का स्तुत्य प्रयास किया है। सुरक्षित मातृत्व, स्त्री और शिशु के सकारात्मक स्वास्थ्य के लिए आज चिकित्सा विज्ञान यह सिद्ध कर चुका है कि दो बच्चों के जन्म के मध्य न्यूनतम दो वर्षों का अंतराल होना चाहिए। इस वैज्ञानिक तथ्य को साहित्य के द्वारा उद्घाटित करने के लिए अंजना जी की लेखनी अभिनंदनीय है। यद्यपि लव और कुश के जन्म समय के संबंध में विश्व विख्यात रामचरित मानस में मात्र एक चौपाई ही है:

दुइ सुत सुंदर सीता जाए।
लव कुस बेद पुरानन्ह गाए।। [6]

ये दोनों सुत विजयी हैं, विनयशील हैं और श्री राम की प्रतिमूर्ति हैं:

दोउ बिजई बिनई गुन मंदिर।
हरि प्रतिबिंब मनहुँ अति सुंदर।। [7]

लव-कुश के जन्म समय में इतनी स्पष्टता से अन्तर दर्शाना संभवतः अन्यत्र कहीं नहीं है। इसलिए अंजना सिंह के इस उल्लेख में स्पष्ट रूप से मौलिकता है और नवीनता है।

लोकापवाद के कारण श्रीराम ने वैदेही का त्याग किया- यह लोक मान्यता है। यद्यपि तुलसी का रामचरित मानस इस प्रसंग में प्रायः मौन है। अंजना जी भी इस मान्यता को नहीं स्वीकार करतीं। वे लिखती हैं - "रामचरित मानस में गोस्वामी तुलसीदास ने सीता का निर्वासन लोक प्रवाद के कारण लिखा है, पर मेरा मन इसे मानने को तैयार नहीं था। वह श्रीराम, जो बहु पत्नीत्व काल की प्रधानता के बीच एक पत्नी के रूप में सीता को स्वीकार करते हैं। लंका से लौटने के उपरांत एक बार भी जानकी से उनके चरित्र को लेकर प्रश्न नहीं करते, वह मर्यादा पुरुषोत्तम लोक प्रवाद से अपनी प्रिया का परित्याग करें, इसे मेरा मन-मस्तिष्क स्वीकार नहीं कर पा रहा था।" [8]

प्रवाद का प्रसंग अन्य रामायणों में हो सकता है, परंतु तुलसीकृत रामचरित मानस में यह प्रसंग नहीं है। रामचरित मानस में अंतिम उत्तरकांड सहित सात काण्ड हैं। मानस की कुछ प्रतियाँ आठ कांडों से युक्त हैं और यह आठवाँ कांड है- लव-कुश कांड। परंतु हिंदी के आचार्यों विद्वानों, मानस के विशेषज्ञों तथा संतों ने इसे तुलसी द्वारा विरचित न मानकर प्रक्षिप्त माना है।

रामचरित मानस में वाल्मीकी को वैज्ञानिक निरूपित किया गया है। गोस्वामी जी इनकी वन्दना इसी रूप में करते हैं: सीतारामगुणग्राम पुण्यारण्य विहारिणौ।
वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कबीश्वरकपिश्वरौ। [9]

ऐसे परम विज्ञानी महर्षि वाल्मीकी के आश्रम में विदग्ध वनदेवी के हृदय को परम शांति प्राप्त होता है और उसके आँसुओं को ठहराव मिलता है:

दुलराया ममता से माँ ने
बैठ सुता के पास,
दग्ध हृदय पर हुआ सिया को
शीतल-सा आभास। [10]

डॉ. अंजना सिंह सेंगर द्वारा विरचित खंडकाव्य- 'विदग्ध वनदेवी' सीता निर्वासन को विषय बना कर लिखे गये काव्यों में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करने का अधिकारी है। भाषायी सुघड़ता, सरलता और सहजता तथा भावों की तरलता और निर्मलता की दृष्टि से यह सर्वश्रेष्ठ कृति है। विज्ञान और विरह- वेदना का समन्वय इसका सर्वथा मौलिक पक्ष है।

संदर्भ:

विदग्ध वनदेवी: डॉ. अंजना सिंह सेंगर, पृ. 49

वही, पृ. 51

वही, पृ. 53

वही, पृ. 120

वही, पृ. 107

रामचरित मानस (उत्तरकाण्ड): तुलीदास, 24/3

वही, 24/4

विदग्ध वनदेवी: डॉ. अंजना सिंह सेंगर, पृ. 48

रामचरित मानस (बालकाण्ड): तुलीदास, 4

विदग्ध वनदेवी: डॉ. अंजना सिंह सेंगर, पृ. 100